S-89 Roll No. ……..

P. J. –101

खगोलीय परिचय एवं फलित ज्योतिष हेतु आरम्भिक गणित

फलित ज्योतिष में डिप्लोमा / प्रमाणपत्र

(डी. पी. जे. / सी. पी. जे.–12 / 16 / 17)

प्रथम सेमेस्टर, सत्र 2018

Time : 3 Hours **Max. Marks : 80**

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. नवीन एवं प्राचीन मत के अनुसार और कक्षाक्रम का विस्तार-पूर्वक उल्लेख कीजए।
2. राशियों एवं नक्षत्रों का विस्तृत विवेचन कीजिए।
3. स्वकल्पित उदाहरण के द्वारा लग्न का साधन कीजिए।
4. दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश का विस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. पंचांग के पाँच अंगों को बताते हुए करण का विस्तृत विवेचन कीजिए।
2. तिथि एवं योग का विस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिए।
3. स्वकल्पित उदाहरण के द्वारा स्पष्टसूर्य का साधन कीजिए।
4. विंशोत्तरी महादशा में नक्षत्र गणना, ग्रहदशा क्रम एवं दशावर्ष का उल्लेख कीजिए।
5. योगिनी दशा का विवेचन कीजिए।
6. सप्तमांश एवं नवमांश का विवेचन कीजिए।
7. अक्षवेदांश, चतुर्विंशांश एवं त्रिंशांश का उल्लेख कीजिए।
8. खगोलशास्त्र का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नक्षत्र के एक चरण का मान होता है :

   (अ) 200 कला

(ब) 100 कला

(स) 80 कला

(द) 60 कला

2. एक राशि में चरण होते हैं :

(अ) 4 चरण

(ब) 8 चरण

(स) 9 चरण

(द) 10 चरण

3. योगों की संख्या है :

(अ) 27

(ब) 60

(स) 11

(द) 7

4. विंशोत्तरी महादशा के अनुसार चन्द्र दशा वर्ष है :

(अ) 10 वर्ष

(ब) 6 वर्ष

(स) 7 वर्ष

(द) 16 वर्ष

5. स्थिर करणों की संख्या है :

(अ) 7

(ब) 11

(स) 4

(द) 27

6. गुरु की उच्च राशि है :
   (अ) मेष
   (ब) मकर
   (स) कर्क
   (द) मीन

7. विषम राशि में प्रथम होरा होती है :
   (अ) चन्द्रमा की
   (ब) सूर्य की
   (स) मंगल की
   (द) शनि की

8. एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक के काल को कहते हैं :
   (अ) नक्षत्र दिन
   (ब) सौर दिन
   (स) चान्द्र दिन
   (द) सावन दिन

9. द्वादश राशियों का अंशात्मक मान होता है :
   (अ) 360°
   (ब) 30°
   (स) 180°
   (द) 90°

10. प्रथम द्रेष्काण का अंशात्मक मान होता है :
   (अ) 30°
   (ब) 20°
   (स) 10°
   (द) 360°